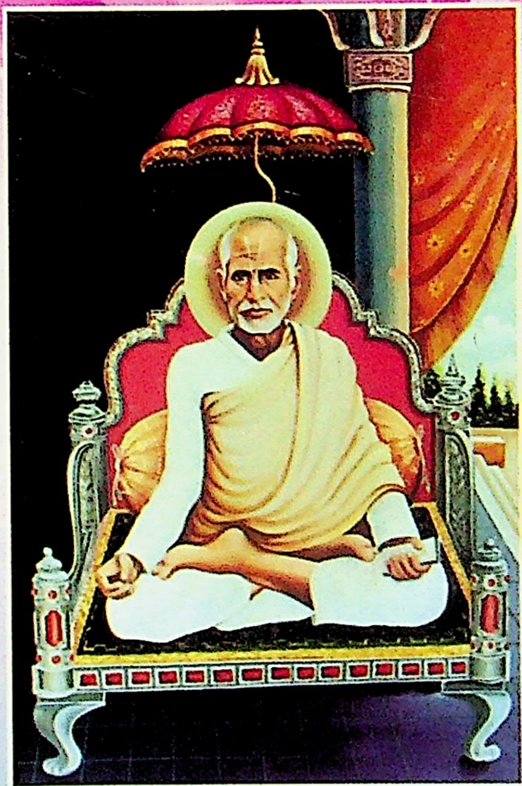
।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।



।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीगुरुषोडशी स्तोत्रम्



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज



*　श्रीसर्वेश्वरो जयति　*



।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीगुरुषोडशी-स्तोत्रम्

प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

वि. सं. २०७२　　निम्बार्काब्द ५०११

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
फोन नं0 - 01497 -227831

प्रथमावृत्ति--१०००

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
दश रुपये

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज
चरणारविन्देषु-

समर्पणम्

अनन्तश्रीयुतंदेवा-चार्यरूपं महासुधिम्।
निम्बार्काचार्यपीठेशं प्रणमामि जगद्गुरुम्।।१
सर्वेश्वरकृपापूर्णा सुख-शान्तिप्रदायिका।
सश्रद्धमर्प्यते गेया सुभगा गुरुषोडशी।।२

समर्पकः-
अस्मद्गुरुपदपङ्कज भक्तिकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

मितिः-मार्गशीर्ष शुक्ल १२ मंगलवार वि. सं. २०७२
देवर्षिश्रीनारदजयन्तीमहोत्सवः दिनांकाः=२२/१२/२०१५

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

मङ्गलाचरणम्

(१)

सर्वेश्वरं सुरैर्वन्द्यं राधामाधवरूपकम्।
आराध्यं मुनिवृन्दैश्च प्रणमामि व्रजेश्वरम्।।

(२)

श्रीहंस-सनकादींश्चं वन्दे देवर्षि नारदम्।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं प्रणमामि सुदर्शनम्।।

(३)

श्रीहरिव्यासदेवञ्च स्वकाचार्यं जगद्गुरुम्।
परशुरामदेवं हि जगद्गुरुवरं भजे।।

(४)

मदीयगुरुदेवञ्च सर्वशास्त्रविशारदम्।
पद्मासनसमारूढं नमामि नितरां मुदा।।

''आचार्यं मां विजानीयात्''

प्रातर्वन्दनीय पूर्वाचार्यो के उदात्त आदर्शपूर्ण जीवन चरित से न केवल मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मात्र ही मिलती अपितु उसके निष्ठापूर्वक मनन–चिन्तन से अनन्त असीम पुण्य मिलता है । उनका पावनतम मंगलमय एवं उनके वेदादि शास्त्र सम्मत सदाचार सत्कर्मादि सभी प्राणीमात्र के हितार्थ ही होते हैं। हमारे श्रुतिस्मृतिपुराणादि शास्त्रों में आचार्य--गुरु चरणों की अतुलनीय महिमा का जो अनुपम वर्णन है वह परम द्रष्टव्य है । निम्नांकित कतिपय उद्धरणों से स्पष्ट है ।

आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत्कर्हिचित् ।
न मर्त्यबुद्ध्या सूयेत सर्वदेवमयो गुरुः ।।
''तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः
श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्''
न बिना गुरुसम्बन्धं ज्ञानस्याधिगमः कुतः ।
गुरुः पारयिता तस्य ज्ञानं प्लवमिहोच्यते ।।
तस्माद्‌गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम् ।
शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपसमाश्रयम् ।।

अतः निष्ठापूर्वक गुरुप्रपत्ति ग्रहण कर तदनुकूल सदाचरण करना जीवन में नितान्त अपेक्षित है । इससे इहामुत्र सर्वत्र कल्याण है । श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अनुग्रहविग्रहरूप आचार्यस्वरूप

के आविर्भाव का भी प्रमुखतया यही उद्देश्य होता है । जो प्राणी स्वकीय कर्तव्य का परिज्ञान नहीं कर सकते हैं तथा भगवदीय त्रिगुणात्मिका माया की भीषण ज्वाला से दन्दह्यमान रहते हैं, उनके श्रेय साधन के लिये ही आचार्य प्रभु का प्राकट्य होता है।

आचार्यप्रवर श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज ने ''श्रीयुगल-शतक'' वाणी ग्रन्थ में ''धनी गुरु जिन हरिनाम सुनायौ'' ''हरि-गुरु-पद-पंकज रति होई'' इन दिव्य वचनों से गुरुमहिमा का कितना मधुरातिमधुर भाव व्यक्त किया है । आचार्यवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने भी-'श्रीपरशुराम सागर' में-

श्रीगुरु संत समान हरि, जो उपजै विश्वास ।
दरसन परस्यां परम सुख 'परसा प्रेम निवास ।।
श्री गुरु समझि सनेह करि, बारंबार संभारि ।
'परसराम' भव सिंधु की, नांव उतारै पारि ।।
श्री गुरु कहैं सो मानियें, सत्य सबद बलि जाउँ ।
झूठे बकै जग प्रसराम, सुमरि सांच हरि नाउँ ।।

इन परम मङ्गलकारी सदुपदेशों से हरिस्वरूप आचार्य गुरु चरणों की गरिमा का कितनी सरसता से प्रतिपादन किया है, जिसमें वेदादिशास्त्रों के विशुद्ध नवनीत का सुन्दर दर्शन है । यथार्थतः हमारी भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वातिशायी माना गया है।

परमश्रद्धास्पद प्रातःस्मरणीय अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु

श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर अस्मद्गुरुवर्य्य श्रीआचार्य चरणों का आविर्भाव भी लोकहितार्थ ही हुआ । आपश्री का परम महनीय परम पवित्र गरिमापूर्ण जीवन भी कितना तपःपूत गौरवास्पद एवं आचार सम्पन्न रहा है जिसका दिग्दर्शन मात्र भी कराना अशक्य है ।

इस परम पावन भारतवर्ष की सुरम्य धरा पर समय-समय पर भगवदीय आज्ञा पाकर श्रीभगवत्पार्षदों का आचार्य स्वरूप से आविर्भाव होता हैं।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के पट्टशिष्य जगद्गुरुवरेण्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज जो मदीय श्रीगुरुदेव थे, उनके पावनतम चरित का परिवर्णन करना अति कठिन है, तथापि जो चरित अवगत हुआ किंवा स्वयं ने प्रत्यक्ष अवलोकन किया, उसी का संक्षिप्त वर्णन एवंविध है-

वि. सं. १९१७ चैत्र कृष्ण १३ सोमवार को जयपुर मण्डलान्तर्गत चाकसू नगर के निकटवर्ती ''पूरण की नागल'' नामक ग्राम में इन्दौरिया गौड़ विप्रकुल में आविर्भाव हुआ। आपके पिताश्री का नाम श्रीगोपालजी शर्मा इन्दौरिया गौड़ था एवं माताश्री का नाम श्रीललितादेवी था।

वि. सं. १९६३ चैत्रकृष्ण १२ सोमवार को ४६ वर्ष की

अवस्था में आचार्यश्री अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर सिंहासनारूढ हुए। आपश्री स्वयं प्रतिदिन हवन करना एवं ८० वर्ष से भी अधिक आयु में भी १ घन्टे पर्यन्त खड़े रहकर अपलक दृष्टि से सूर्य की ओर निहारते हुए श्रीगोपालमन्त्रराज का जाप किया करते थे। दैनिक श्रीसर्वेश्वर प्रभु के १०८ तुलसी दल समर्पण का नियम था जो अविचल रूप से बना रहा। स्वयं नैवेद्य निर्माण करके श्रीप्रभु के समर्पण करना दैनिक उभयकाल में श्रीभगवद्दर्शन आदि का अनुपम नियम धारण से सभी को उत्तम शिक्षा का परिज्ञान कराना आदि अनेक कार्यों का उल्लेख लेखनी में सामर्थ्य नहीं।

प्रतिदिन परिभ्रमण, व्यायाम प्रभृति नियमों का परिपालन स्वाभाविक धर्म था। समागत भगवद्भक्तजनों का श्रीप्रभु प्रसाद एवं पीत परिधान देकर उन्हें निवास का संकेत करना।

अंग्रेजों के शासन काल में ''खरवा'' ग्राम के वीराग्रगण्य ठाकुर श्रीगोपालसिंहजी एवं श्रीमोडसिंहजी को आचार्यपीठ में आश्रय देकर उनकी सर्वात्मना सुरक्षा का दायित्व लेना एक अनुपम ऐतिहासिक कार्य था।

जब उभय ''खरवा'' निवासी ठाकुरसुरक्षित अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचे उससे पूर्व उन्होंने अपने समस्त शस्त्रास्त्र आपश्री के श्रीचरणों में समर्पित कर दिये जो आज भी आचार्यपीठ में कतिपय वे सुरक्षित हैं। इस प्रकार आदर्शपूर्ण विभिन्न कार्य

आपश्री के हैं। जिनको निरूपण कहाँ तक किया जाय।

वि. सं. १६६४ में आपश्री के कर कमलों द्वारा ही श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय की संस्थापना हुई थी।

इस प्रकार आचार्यवर्य ने ८३ वर्ष पर्यन्त इस धरातल को सुशोभित किया और श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ को ३६ वर्ष तक अलंकृत कर वि० सं० २००० के ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को ऐहिक लीला संवरण कर श्रीसर्वेश्वर--राधामाधव प्रीु के नित्य दिव्य चिन्मय धाम में प्रवेश किया। चरण पादुका आचार्यपीठ के सुरम्य उद्यान (बगीची) में सम्पूजित हैं। आपका पाटोत्सव चैत्र कृष्ण १२ (द्वादशी) को मनाया जाता है।

श्रीमद्गुरुदेवपदसरोजभक्तिरसकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

श्रीगुरुषोडशी-स्तोत्रम्

पीठेशं बालकृष्णश्रीदेवाचार्यं जगद्गुरुम् ।
निम्बार्काचार्यरूपञ्च भावये निजमानसे ।।१।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की अपने अन्तर्मानस में भावना करते हैं।।१।।

धीरं गभीरहार्दं हि लोककल्याणकारकम् ।
दीनाऽऽर्तसहयोगाय कृतयत्नं समाश्रये ।।२।।

जिनका परमधीर गभीर हृदय है और समस्त जन समुदाय का कल्याण करने में सर्वदा तत्पर एवं दीन-दुःखियों के लिए सदा प्रयत्न करने वाले आचार्यश्री का आश्रय लेते हैं।।२।।

स्वद्वैताद्वैतसिद्धान्त-सुप्रचाराय संस्थितम् ।
निम्बार्कसम्प्रदायार्थं कृतकार्यं गुरुं भजे ।।३।।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचुर प्रचार करने के लिए सब समय अवस्थित एवं निम्बार्क सम्प्रदाय के लिए विविध प्रकार से कार्य करने वाले आचार्यश्री गुरुदेव का भजन करते हैं।।३।।

श्रुति-पुराण-तन्त्रादिसच्छास्त्रपारगं परम् ।
विद्या-विनयसम्पन्नं स्वाराध्याराधकं भजे ।।४।।

श्रुति-पुराण-तन्त्रादि समस्त शास्त्रों के महामनीषी एवं परम विनय सम्पन्न अपने परमाराध्य सर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान्

की आराधना में संलग्न आचार्यश्री का भजन करते हैं।।४।।

श्री-''श्रीजी'' श्रीमहाराजं जगद्वन्द्यं तपोधनम् ।
निम्बार्काचार्यपीठस्याऽऽचार्यं सद्गुरुमाश्रये ।।५।।

परम तपोवन विश्ववन्द्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर आचार्यवर श्री ''श्रीजी'' महाराज का समाश्रय लेते हैं।।५।।

सर्वेश्वरार्चनाचर्यातत्परं नितरां मुदा ।
श्रीमद्भागवताख्यानवर्णने निपुणं भजे ।।६।।

महर्षिवर्य श्रीसनकादि संसेव्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा परिचर्या करने में सर्वदा तत्पर और श्रीमद्भागवत में परिवर्णित विविध आख्यानों के निरूपण करने में अति कुशल ऐसे आचार्यश्री का भजन करते हैं।।६।।

तुलसीमालयाजापे स्थितञ्च तिलकाङ्कितम् ।
पद्मासनसमासीनं भावये दिव्यदर्शनम् ।।७।।

तुलसी माला जिनके कर कमलों में सदा स्थित रहती है और उसके द्वारा सर्वदा महामन्त्र का जप करने वाले एवं गोपीचन्दन के तिलक से परम सुशोभित और पद्मासन से विराजित जिनके दिव्य दर्शन हो रहे हैं। उन परमाचार्यश्री का अपने हृदय से भावना करते हैं।।७।।

वृन्दावननिकुञ्जस्थं रासलीलारसावहम् ।
गीताशास्त्रविशेषज्ञं नमामि सिद्धिसागरम् ।।८।।

श्रीवृन्दावनधामस्थ श्री श्रीजी बड़ी कुञ्ज में बहु समय तक जिन्होंने निवास किया एवं रासविहारी की रासलीला में सदा

अवगाहन करने वाले और श्रीमद्भगवद्गीता का प्रतिदिन पाठ करने में तत्पर और जो अपनी वचनसिद्धि से परिपूर्ण हैं ऐसे परमाचार्यवर्य का हम अभिनमन करते हैं।।८।।

राधाकृष्णपदाम्भोजे सदानुरक्तभावनम् ।
पराभक्तिसुधासिक्तं भजामि भक्तिदायम् ।।९।।

नित्यनिकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण भगवान् के युगलचरणारविन्दों में सदा अनुरक्त रहने वाले और पराभक्ति सुधा से अभिसिञ्चित तथा भगवद्भक्ति प्रदान करने वाले आचार्यश्री का भजन करते हैं।।९।।

रसब्रह्ममुकुन्दाङ्घ्रिशरणं शास्त्रसत्तमम् ।
वार्द्धक्येऽपि नित्यचर्या-पालकं सततं भजे ।।१०।।

रस परब्रह्म श्रीमुकुन्दविहारी के युगलचरणारविन्दों में सदा शरण परायण एवं शास्त्रों के ज्ञाता और अपनी वृद्धावस्था में भी अपनी नित्य दैनिकचर्या के परिपालन करने में सतत तत्पर ऐसे आचार्यवर्य का भजन करते हैं।।१०।।

सारल्य-दैन्य-कारुण्य-सौशील्यादिगुणाकरम् ।
गो-विप्र-साधुसेवायामर्थदं याजिनं भजे ।।११।।

सरलता, दीनता, करुणता एवं सौशील्यादि गुणों से परिपूर्ण एवं गो-विप्र-साधु सेवा में अर्थ का विनियोग करने वाले और यथावसर पर यज्ञ करने में भी संलग्न ऐसे आचार्यश्री का भजन करते हैं।।११।।

मन्दिरोत्सवसत्कार्ये प्रवीणं दीनवत्सलम् ।

शुभ्रपीताम्बराच्छन्नं देदीप्यमानमाश्रये ।।१२।।

श्रीराधामाधव मन्दिर के विभिन्न उत्सवों के कार्यों में परम प्रवीण दीनवत्सल तथा श्वेत वस्त्र एवं पीताम्बर को धारण करने वाले परम शोभायमान आचार्यश्री का आश्रय लेते हैं।।१२।।

तुलसीकण्ठिकारम्यं गोपीचन्दनचर्चितम् ।
शंख-चक्रांकितं चारु शरण्यं सम्भजे सदा ।।१३।।

जिनके कमनीय कण्ठ में तुलसी की कण्ठी विराजित है। एवं गोपीचन्दन से आपश्री का कमनीय भाल अतिशय सुशोभित है। युगलभुजदण्डों पर सुन्दर शंख-चक्र के चिह्न धारण किये हुए शरणागतजनों को सदा आश्रय देने वाले परमाचार्यश्री का भजन करते हैं।।१३।।

ललाटे नित्यं तिलकं तुलसीमाल्यभूषितम् ।
कमलमालया जापे शोभितं दैनिकं भजे ।।१४।।

जिनके सुभग ललाट पर तिलक सुशोभित है तुलसी माला से विभूषित और तुलसी एवं कमलगट्टा की माला से दैनिक जप परायण परम शोभायमान आचार्यश्री का भजन करते हैं।।१४।।

नित्यं व्यायामशीलञ्च नित्यं भ्रमणोत्सुकम् ।
पद्मासनसमासीनं प्राणायामपरं भजे ।।१५।।

प्रतिदिन व्यायाम करने में अतिकुशल एवं नित्यप्रति परिभ्रमण करने वाले और अपने भजनकाल में पद्मासन्न से विराजित प्राणायाम परायण आचार्यश्री का भजन करते हैं।।१५।।

अनन्तश्रीयुतं पूज्यं युग्मलीलासुचिन्तकम् ।
श्रेष्ठवांछितदातारं नमामि करुणामयम् ।।१६।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज जो युगल प्रियाप्रियतम की दिव्य लीला का चिन्तन करने में संलग्न परमकरुणावरुणालय और समागत अपनी भावना प्रकट करने वाले भगवद्जनों को अभिलषित वस्तु को प्रदान करने में तत्पर आपश्री का अभिनमन करते हैं।।१६।।

श्रीगुरुषोडशी-स्तोत्रं सकलेत्सितसम्प्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।१७।।

अपने वाञ्छित मनोरथ को प्रदान करने वाला श्रीगुरुषोडशी–स्तोत्र जिसकी रचना आरपश्री के ही कृपा प्रसाद से ही सम्पन्न हुई है।।१७।।

परमाराध्य आचार्यश्री का पावन स्वरूप

(१)

श्रीनिम्बार्काचार्यवर, निम्बारक-पीठेश ।
जगद्गुरु श्रीबालकृष्ण-शरणदेव उपदेश ।।

(२)

श्री ''श्रीजी'' महाराज पद, कोटि साष्टाङ्ग प्रणाम।
देवाचार्य स्वरूप हैं, अनुपम दिव्य ललाम ।।

(३)

तुलसी कण्ठी शुभ तिलक, सुशोभित शंख-चक्र।
श्रीमद् बालकृष्णशरण-देवाचार्य व्रत तक्र ।।

(४)

शुभ्र वसन शोभित सदा, निजकर तुलसी माल ।
राधामाधव जपत नित, सर्वेश्वर प्रतिपाल ।।

(५)

दर्भ-पवित्रा कराङ्गुलि, पद्मासन अधिरूढ ।
सन्ध्यावन्दन, हवन, जप, गीता पाठ निगूढ ।।

(६)

नित्य मध्याह्नकाल शुभ, दिवाकर तीव्र-ताप ।
उत्थित अपलक रूप में, भास्कर दर्शन-जाप।।

(७)

सर्वेश्वर सेवा निरत, स्वयंपाकिता कर्म ।
मन्त्रराज प्रतिदिन जपत, स्तोत्र पाठ निज धर्म।।

(८)

अपरस में सेवा निरत, निज कर पाक विधान ।
पद्मासन शोभित सतत, तुलसी-अर्चन ध्यान ।।

(९)

गो-विप्र-प्रिय सन्तों का, होता नित सम्मान ।
दीन दुःखी जन ध्यान रत, दैन्य भाव की खान ।।

(१०)

तरु लतिका सेवा निरत, पशु-पक्षी-गजराज ।
तुरङ्ग-कुरङ्गादि वृषभ, सुपोषक महाराज ।।

(११)

वाणी में माधुर्य अति, शास्त्रों का शुभ ज्ञान ।
साधुता अति दीनता, सद्‌गुण-सिन्धु अमान ।।

(१२)

कृपा-दया-करुणा हृदय, शान्ति-कान्ति आगार ।
षड्‌रिपुदल प्रवेश नाहि, सर्वेश्वर सञ्चार ।।

(१३)

पूर्वाचार्य सरणि परक, जीवन एरम विशुद्ध ।
परम्परा-पोषक सदा, असद्-भाव विरुद्ध ।।

(१४)

श्रीचरण मुख वचन सिद्ध, शरणागत प्रतिपाल ।
अशरण शरण प्रसिद्ध है, जपत मन्त्र गोपाल ।।

(१५)

मुकुन्दमन्त्र सतत जपत, प्रतिदिन गीता पाठ ।

विविध स्तोत्र स्वाध्यायरत, सोहत वैभव ठाठ ।।

(१६)

व्रत-तीरथ-सत्संग रत, वृन्दावन-व्रज निष्ठ ।
रासलीला रसिकभूप, गायन श्रवण वरिष्ठ ।।

(१७)

श्रीनिम्बारकतीर्थ तट, राजत तरुवर बीच ।
भक्तवृन्द पूजन निरत, अरपन चन्दन कीच ।।

(१८)

श्रीगुरु-पदपङ्कज शरण, निश्चय जीवन सार ।
राधासर्वेश्वरशरण, प्रणमति बारम्बार ।।

*

मंगल मोहक मधुर बधाई ।
श्रीनिम्बारकपीठ महोत्सव, अनुपम अमृत धार बहाई ।।
निम्बारक आचार्य जगद्गुरु, जय जय उचरत जय नभ छाई ।
बालकृष्णश्रीशरणदेव हैं, आचारजवपु छवि मन भाई ।।
चैत्र कृष्ण की तेरस अतिशुभ, सोमवार दिन तिथि सुखदाई ।
विक्रम सम्वत् शुभ उन्नीसौ, तरेसठ पावन दिन दरशाई ।।
सन्त सुधीजन भक्तवृन्द भी, श्री 'श्रीजी' जय धुनि गुंजाई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुनि पुनि प्रणमति पद रज पाई ।।१।।

बाजत आज बधाई सुन्दर ।
सुनि-सुनि आवत बुध वन्दीजन, पुलकित गावत वेणु बजाकर ।।
नाम उचारत बालकृष्णश्री,-शरणदेव हैं श्रीजी भास्कर ।
बाजत वीणा-मृदंग-मुरली,- भेरी-तुरयी मंजुल झांझर ।।
लै लै रसमय भोज्य पदारथ, आवत भावुक तन्मय होकर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह पाटोत्सव आचारजवर ।।२।।

श्रीगुरुचरण सदा ही ध्यावो ।
कृपाकोष हैं करुणासागर, युगलचरणरज शिर पधरावो ।।
सहज दयामय शरणागतजन,-अतिहितकारी युग-रस पावो ।
वसन्त-काफी मधुर राग रस, बधाई गाकर हिय हरषावो ।।
आचारजवपु निम्बदिवाकर, कीर्तन करि-करि भक्ति बढावो ।
बालकृष्णश्रीशरणदेव हैं, जगद्गुरुवर जय जय गावो ।।
दरश मात्र सब सफल मनोरथ, शुभ अवसर है हिय सरसावो ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, मानव जीवन सफल बनावो ।।३।।

श्रीगुरु दरशन निश्चय पावो ।
निज मन निष्ठा शुद्ध भावना, पाकर अनुग्रह हिय सरसावो ।।
वे हैं अतिशय कृपा पुञ्जघन, रस बरसावे अविरल ध्यावो ।
श्रीवृन्दावननवलकुंजवन, युगललालश्री गुण-गण गावो ।।
निश्चय श्रीगुरुचरणाम्बुजरज, शिर धारण करि दुरित नशावो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अन्तर्मन ध्रुव अति हरषावो ।।४।।

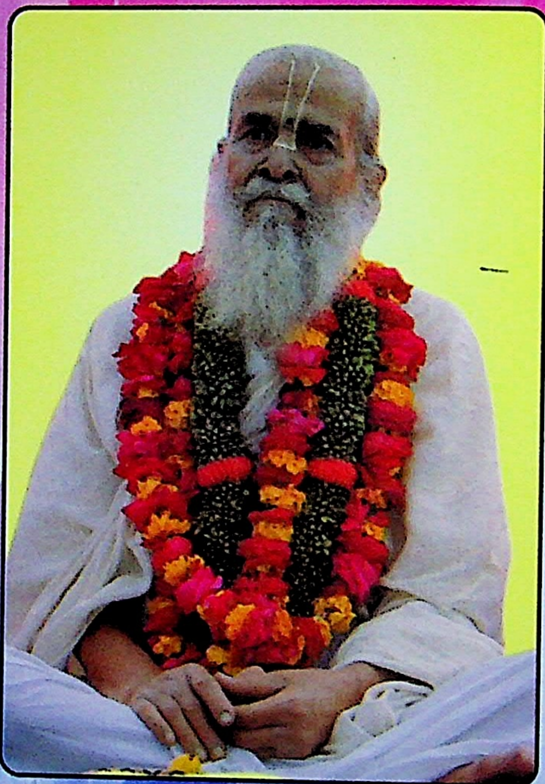
चलो निहारो महोत्सव पावन ।
श्रीसर्वेश्वर राधामाधव, दर्शन पाकर सुख सरसावन ।।
परशुराम श्रीदेवाचारज, प्रतिपल तत्पर ताप निवारन ।
श्रीनिम्बारकतीर्थ सुपावन, नान्ह करत ही दुरित नशावन ।।
पवित्र सलिला साभ्रमती जल, मार्जन सेवन लभत मन भावन।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह शुभ उत्सव सकल लुभावन।।५।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा विरचित-

* ग्रन्थमाला *

१. प्रातःस्तवराज
२. श्रीयुगलगीतिशतकम्
३. उपदेश - दर्शन
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः
६. श्रीराधामाधवशतकम्
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम्
८. हिन्दु-संघटन
९. भारत-भारती-वैभवम्
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम्
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्
१४. भारत कल्पतरु
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्
१६. विवेक-वल्ली
१७. नवनीतसुधा
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम्
१९. श्रीराधाशतकम्
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम्
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम्
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्
२४. छात्र-विवेक-दर्शन
२५. भारत-वीर-गौरव
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः
२७. परशुराम-स्तवावली
२८. श्रीराधा-राधना
२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम्
३१. श्रीराधामाधवरसविलास
३२. गोशतकम्
३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः
३४. स्तवमल्लिका
३५. श्रीरामस्तवावली
३६. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम्
३७. दिव्यचरितप्रभा
३८. प्रेरणाशतकम्
३९. उद्गारशतकम्
४०. श्रीपीताम्बरदशश्लोकी
४१. श्रीयुगलस्तववल्ली
४२. श्रीस्तवाराधना
४३. श्रीनिम्बार्कवेदान्ततत्त्वदर्शिका
४४. श्रीस्तवोपासना
४५. श्रीधन्वन्तरिकृपाष्टकम्
४६. श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्य दशश्लोकी
४७. श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य-स्तवविंशति
४८. श्रीपूर्वाचार्य-स्तवावली
४९. श्रीगुरुषोडशी स्तोत्रम्
५०. श्रीसीताराम दशश्लोकी
५१. श्रीब्रह्मचारी श्रीगिरिधारि-शरणाष्टकं स्तोत्रम्
५२. श्रीनृसिंहाष्टकं स्तोत्रम्



श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्र-चूडामणि, सर्वतन्त्र - स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश,
राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री "श्रीजी" महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क तीर्थ -सलेमाबाद

